Toppersnotes
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़

शिक्षक पात्रता परीक्षा

CG-TET

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, रायपुर

भाग - 2

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	तत्सम – तद्भव शब्द	5
3	देशज शब्द	7
4	उपसर्ग	11
5	प्रत्यय	20
6	संधि	28
7	समास	44
8	संज्ञा	50
9	सर्वनाम	52
10	विशेषण	53
11	क्रिया	54
12	अव्यय– अविकारी शब्द	61
13	पर्यायवाची	64
14	विलोम शब्द	66
15	वाक्य के लिए एक शब्द	72
16	शब्द युग्म	78
17	एकार्थी शब्द	87
18	वर्तनी शुद्धि	92
19	पद बंध	105
20	पद परिचय	107
21	वाक्य विचार	109
22	लिंग	116
23	वचन	119

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	काल	120
25	विराम चिन्ह	122
26	कारक	125
27	काव्य मे भाव, विचार, शिल्प, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	128
28	मुहावरे	130
29	लोकोक्तियाँ	136
30	अपठित गद्यांश	139
31	हिन्दी शिक्षण	147
32	हिन्दी शिक्षण विधि	150
33	भाषा–शिक्षण उपागम	158
34	भाषा दक्षता का विकास	160
35	भाषा कौशल	162
36	शिक्षण के अन्य कौशल	165
37	भाषा–शिक्षण में चुनौतियाँ	167
38	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	168
39	आंकलन	172
40	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	177
41	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	179

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

<u>लिपि</u> –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – ष् + अ

त्र – त् + र + अ

ज्ञ – ज् + ञ्+ अ

श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ङ्., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है

इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ऍ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।
  1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
  4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
  5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
  6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
  7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूध्र्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER तत्सम - तद्भव

तत्सम शब्द

वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित है । अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति - चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते है और हिंदी में वे उनसे रहित। जैसे-

संस्कृत में कर्पूरः, पर्यङ्कः, फलम् ज्येष्ठः

हिंदी में कर्पूर पर्यङ्क, फल ज्येष्ठ

तद्भव शब्द

(उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने हैं और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते हैं। जैसे-

कर्पूर > कपूर

पर्यङ्क > पलंग

अग्नि > आग आदि ।

नोट - नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है इन्हें देखे और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है?

तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लू	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गधा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लूक	भालू	श्वसुर	ससुर
श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग / सौभाग्य	सुहाग
कर्म	काम	हास्य	हँसी
स्नेह	नेह	कूप	कुआँ
लोक	लोग	कातर	कायर
कुठार	कुल्हाडा	शिक्षा	सीख
शाक	साग	पक्व	पक्का
गणना	गिनती	इष्टिका	ईंट
श्वश्रू	सास	काक	काग
विष्ठा	बीठ	भित्ति	भीत
कडजल	काजल	शर्करा	शक्कर
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	मालिनी	मलिन
अगम्य	अगम	नव्य	नया
ताम्र	ताँबा	पौत्र	पोता
प्रस्तर	पत्थर	शया	सेज
मृत्यु	मौत	स्तन	थन
शृगाल	सियार	मस्तक	माथा
स्वामी	साई	हरिद्रा	हल्दी
चंचु	चोंच	अपूप	पूआ
प्रिय	पिया	श्रृंखला	सौकल
कारवेल	करेला	चतुष्मपादिका	चौकी
मृतिका	मिट्टी	अर्द्धतृतीय	ढाई
पर्यंक	पलंग	शुष्क	सूखा
कूट	कूडा	क्षीर	खीर
खर्पर	खपरा	घट	घडा
चणक	चना	काया	काय
पक्ष	पंख	सप्त	सात
अक्षत	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्राता	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला		

धरित्री	धरती	अक्षर	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	दधि	दही
याचक	जायक	ग्राहक	गाहक
उपवास	उपास	अट्टालिका	अटारी
निर्वाह	निवाह	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर
पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस
दश	दस	स्वर्ण	सोना
गौरी	गोरी	हस्ती	हाथी
तिक्त	तीता	चतुर्दश	चौदह
मयूर	मोर	केतक	केवडा
सर्षप	सरसों	स्वप्न	सपना
हास	हँसी	उद्वर्तन	उबटन
वचन	बचन	परशु	फरसा
सर्प	साँप	शलाका	सलाई
रात्रि	रात	वत्स	बच्चा
क्षुर	छूरा	दुग्ध	दूध
पूर्णिमा	पूनम	सर्व	सब
मौक्तिक	मोती	आशिष	आसीस
चक्रवाक	चकवा	श्वसुराल्य	ससुराल
घृत	घी	कंकण	कंगन
गिद्ध	गीध	भक्त	भगत
कांचन	कंचन	गर्भिणी	गाभिन
यशोदा	जसोदा	चरित्र	चरित
अभीर	अहीर	फाल्गुन	फागुन
श्याली	साली	योद्धा	जोधा

पक्षी	पंछी	अंजलि	अँजुरी
दंतधावन	दातुन	जव	जौ
छिद्र	छेद	जामाता	जमाई
यश	जस	सूचि	सूई
रात्रि	रात	अद्य	आज
ओष्ठ	होंठ	कुक्कुर	कुत्ता/कुकुर
अक्षर	अच्छर (आखर)	अमृत	अमिय
आश्चर्य	अचरज	अक्षत	अच्छत
		आशा	आस
		उत्साह	उछाह
अनुर्वर	ऊसर	ऊषर	ऊसर
		कुपुत्र	कपूत
कांस्यकार	कसेरा	कर्कट	केवडा
क्षत्रिय	खत्री		
ग्रंथि	गांठ	गोस्वामी	गोसाई
चौर	चोर	छाया	छाह
दीपावली	दीवाली	नियम	नेम
पंक्ति	पंगत	पक्षी	पंछी
प्रहर	पहर	पत्रिका	पाती
मित्र	मीत	मुख	मुँह
श्मश्रु	मूँछ	मेघ	मेह
साक्षी	साखी	स्वप्न	सपना
हस्ति	हाथी	हृदय	हिय
		वज्रांग	बजरंग
वृक्ष	बिरख	अज्ञान	अजान
अनशन	अनसन	यजमान	जजमान

Unleash the topper in you

3 CHAPTER देशज शब्द

- देशज शब्द वे शब्द शब्द वे शब्द हैं जिनका जन्म देश में ही हुआ है।
- देशज शब्द की एक विशेषता यह भी है कि उसमें लोक या अंचल की संस्कृति की महक महसूस की जा सकती है।
- भारत में दूसरी भाषा से लिये गए शब्द भी देशज कहलाएंगे अगर उस भाषा का जन्म भारत में हुआ हो।

प्रमुख देशज शब्द

द्रविड़ भाषाओं से	अपने गठन से (मनगठित शब्द)
ओसारा, कच्चा, कज्जल, कटोरा, काका, केड, कुटी, कुप्पी, केतकी, चक्का, चिकना, चूड़ी, झंझा, झूठ, टंटा, टोपी, ठेस, डंका, नीर,पिंड, पेट, भंगी, माला, मीन, मुकुट, लाठी, लोटा, सूजी, इडली, डोसा, सांभर, पिल्ला आदि।	चटपटा, चिड़चिड़ा, चुटकी, छिछला, झंकार, टंकार, ठठेरा, भभक, भोंपू, कटकटाना, खटखटाना. खुरचना, घुड़की, सनसनाहट, हिनहिनाना आदि।
कोल, संथाल भाषाओं से – कपास, कोड़ी, पान, परवल, बाजरा, सरसों।	

विदेशज शब्द

- विदेशज शब्द वे शब्द हैं जो हमारे देश में नहीं उपजे बल्कि सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रक्रिया में हिंदी भाषा में स्वीकार किये गए हैं।
- हालाँकि विदेशज और देशज, दोनों ही प्रकार के शब्द दूसरी भाषाओं से संबद्ध होते हैं, किंतु देशज शब्दों का संबंध इसी देश की भाषाओं और विदेशज का विदेशी भाषाओं से होता हैं।

प्रमुख विदेशज शब्द

तुर्की शब्द	उर्दू, काबू, कैंची, कुली, कुर्की, चाकू, चिक, चम्मच, चकमक, चेचक, तमगा, तलाश, तुर्की, तोप, तोशक, नौकर, बारूद, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा, लाश, सराय, सुराग।
अरबी शब्द	अजब, अजीब, अदालत, अक्ल, अल्लाह, असर, आखिर, आदमी, आफत, अमीर, इनाम, इजलास, इरजत, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान. औरत, औसत, कब्र, कमाल, कर्ज, किस्मत, कालीन, कीमत, किताब, कुरसी, खत, खत्म, खिदमत, ख्याल, जिस्म, जुलूस, जलसा जवाब, जहाज, जलेबी, ज़िक्र, तमाम, तकदीर, तारीख, तकिया, तरक्की, दवा, दावा, दिमाग, दुनिया, नतीजा, नहर, नकल, फकीर, फिक्र, फैसला, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मजबूर, मुकदमा, मौसम, मौलवी, मुसाफिर, यतीम, राय, लिफाफा, बारिस, शराब, हक, हजम, हाजिर, हिम्मत, हुक्म, हैजा, हौसला, हकीम, हलवाई। अरबी भाषा के शब्द (ट्रिक) – एक अजीब आदमी, औरत के साथ अपनी औलाद का इलाज करानें के लिए तहसिल व जिले के मशहुर वकील के पास गये जो कानून की किताब लिए दुनिया की अदालत में अक्ल के नशे में कुर्सी की ताकत पर दौलत को ठुकराकर तारीख का तमाशा खत्म कर फकीर की मदद के मकसद से लिफाफे में बंद फैसला बहस मुक्त सुनाया जिससे जलेबी के हलवाई हुक्मा की हिम्मत बढ़ गई।
फ़ारसी शब्द	आबरू, आतिशबाजी, आराम, आमदनी, आवारा, आवाज़, उम्मीद, उस्ताद, चापलूस, कारीगर, किशमिश, कुरता, कुश्ती, कूचा, खाक, खुद, खुदा, खामोश, खुराक, गरम, गज, गवाह, गिरफ्तार, गिर्द, गुलाब, चादर, चालाक, चश्मा, चेहरा, जहर, जलसा, जूलूस. जोर, जिंदगी, जागीर, जादू, जुरमाना, जोश, तबाह, तमाशा, तनखाह, ताजा, तेज, दंगल, दफ्तर, दरबार, दारोगा, दवा, दिल, दीवार, दूकान, नापसंद, नापाक, पाजामा, परदा, पैदा, पुल, पेश, बारिश, बीमार, बुखार, बी, मज़ा, मलाई, मकान, मजदूर,

	मुश्किल. मोरचा, याद, यार, रंग, राह, लगाम, लेकिन, वापिस, शादी, सितार, सरदार, समोसा, साल, सरकार, हफ्ता, हजार।
अंग्रेजी शब्द	अपील, कोर्ट, मजिस्ट्रेट, जज, पुलिस, टैक्स, कलक्टर, डिप्टी, ऑफ़िसर, वोट, पेंशन, कॉपी, पेंसिल, पेन, पिन, पेपर, लाइब्रेरी, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, डॉक्टर, कंपाउंडर, नर्स, ऑपरेशन, वार्ड, प्लेग, मलेरिया, कालरा, हार्निया, डिप्थीरिया, कैंसर, कोट, कॉलर, पैंट, हैट, शर्ट, स्वेटर, हैट, बूट, जंपर, ब्लाउज, कप, प्लेट, जग, लैंप, सूटकेस, गैस, माचिस, केक, टॉफ़ी, बिस्कुट, टोस्ट, चॉकलेट, जैम, जेली, ट्रेन, बस, कार, मोटर, लारी, स्कूटर, साइकिल, बैटरी, ब्रेक, इंजन, यूनियन, रेल, टिकट, पार्सल, पोस्ट कार्ड, मनी ऑर्डर, स्टेशन, ऑफ़िस, क्लर्क, गार्ड, एजंट।
अन्य भाषाओं के	चीनी शब्द – चाय, लीची, लोकाट, तूफान, चीनी भाषा के शब्द ट्रिक – चीन में लोकाट नामक तूफान आया जिसे चाय, लीची की फसल नष्ट हो गई। जापानी शब्द– झम्पान, रिक्शा, सायोनास, सुनामी। जापानी भाषा के शब्द ट्रिक – जापान में सायोनास सुनामी के समय रिक्सा चलाने वालें को झांप लगा दी जाती है। पुर्तगाली शब्द– अनन्नास, आलपीन, गमला, गिरजा, चाबी, नीलाम, पपीता, अचार, अगस्त, आलू, इस्पात, कनस्तर, कारबन, कमीज, कमरा, गोभी, गोदाम, पीपा, बस्ता, बटन, पतलून, मेज, लबादा, संतरा, साबुन, पाव(रोटी), पादरी, बंबा, बाल्टी, फीता, आलमारी। पूर्तगाली भाषा के शब्द ट्रिक –पादरी का लड़का आया गोदाम में बनें कमरे को गमले में रखी चाबी से खोलकर बस्ता मेज पर रखा नीले कमीज के बटन खोले, पतलून उतारकर तौलिया लपेटा फीता निकाला कनस्तर में कार्बन युक्त साबुन से हाथ थाकर अलमारी पर रक्खे आलू, गोभी, पपीता, अन्नानास, के अचार को पाव (रोटी) के साथ इस्पात के आलपीन से खाया। फ्रेंच शब्द – अंग्रेज़, कारतूस, कूपन, फ्रांसीसी, रेस्तरां, काजू, सूप, मेयर, मार्शल। भाषा के शब्द ट्रिक – अंग्रेज मेयर (मार्शल) कूपन में निकला कारतूस लेकर काजू व सूंप खाने रेस्तरांन में आया। डच शब्द– तुरुप, बम (ताँगे का एक पुरजा), चिडिया, ड्रिल।

संकर शब्द

कुछ शब्द दो भाषाओं के मिलने से बन जाते हैं, जिन्हें संकर शब्द कहा जाता है। सामान्यतः इनका विवेचन कम ही किया जाता है किंतु कुछ विद्वान इन्हें स्वीकृति प्रदान करते हैं। ऐसे कुछ शब्द इस प्रकार हैं।

थानेदार (हिंदी + फारसी) परदानशीन (अरबी + फारसी) वर्षगाँठ वर्ष (संस्कृत) गाँठ (हिंदी)
वोटदाता (अंग्रेजी + तत्सम) लाजशरम (हिंदी + फारसी) जाँचकर्ता (फारसी + हिंदी) फैशन परस्त (अंग्रेजी + फारसी) मोटरगाड़ी (अंग्रेज़ी + देशज) बेढंगा (फारसी + हिंदी) बदहज़मी (फारसी + अरबी) रेल यात्री (अंग्रेजी + संस्कृत) बे आब (फारसी + अरबी) नेक नीयत (फारसी + अरबी) टिकटघर (अंग्रेजी + हिंदी)

(2) रचना के आधार पर – नए शब्द बनाने के प्रक्रिया के आधार पर शब्दों के तीन भेद किए जाते हैं –

(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द
(iii) योगरूढ़ शब्द

(i) रूढ शब्द – वे शब्द जो किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी, वस्तु के लिए वर्णों से प्रयुक्त होनें के कारण किसी विशिष्ट अर्थ में प्रचलित हो गयें हैं, 'रूढ' शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों में अर्थ की एक ही इकाई होती है। तथा इनका कोई अन्य अर्थ भी नहीं निकलता है।
जैसे – पेड़, पत्थर, देवता, आकाश, मेढ़क, स्त्री, गाय, रोटी, दूध, पानी, फल, बकरी, आदमी, औरत, चिड़िया।

(ii) योगिक शब्द – वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों से बने हैं । इन शब्दों का अपना अलग से अर्थ भी होता है। किंतु मिलकर संयुक्त अर्थ का बोध कराते हैं उन्हे योगिक शब्द कहते हैं।
जैसे – विद्यालय (विद्या + आलय)
प्रेमसागर – (प्रेम + सागर)
प्रतिदिन (प्रति + दिन)
महर्षि – (महा + ऋषि)
दुधवाला (दूध + वाला)
राष्ट्रपति – (राष्ट्र + पति)

(iii) योगरूढ़ शब्द – वे यौगिक शब्द जिनका निर्माण पृथक–पृथक अर्थ देनें वालो शब्दों के योग से होता है। किन्तु वे आपस में मिलकर किसी एक विशेष अर्थ का प्रतिपादन करनें के लिए रूढ़ हो गए हैं, ऐसे शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं।
जैसे – लम्बोदर लम्बा + उदर (बड़ा पेट) के योग से बना है किन्तु अपने मूल अर्थ से इतर इस शब्द का अर्थ (गणेश) रूढ़ है।

दशानन	(दस + आनन) –	(रावण)
पीताम्बर	(पीत + अम्बर) –	(विष्णु)
गजानन	(गज + आनन) –	(गणेश)
त्रिनेत्र	(त्रि + नेत्र) –	(शिव)
जलज	(जल + ज) –	कमल
घनश्याम	(घन + श्याम) –	(कृष्ण)
रजनीचर	(रजनी + चर) –	(राक्षस)
नग	(न + ग) –	पर्वत
चतुर्भुज	(चतुः + भुज) –	विष्णु
चतुरानन	(चतुर + आनन) –	ब्रह्म
इन्दुशेखर	(इन्दु + शेखर) –	शिव

(3) प्रयोग के आधार पर

प्रयोग अथवा रूप परिवर्तन के आधार पर हिंदी में शब्दों के दो भेद किए जाते हैं।

(i) **विकारी शब्द** – वे शब्द जिनका लिंग, वचन, काल, पुरूष कारक के अनुसार रूप परिवर्तन हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। विकारी शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया शब्द आते हैं।

(ii) **अविकारी शब्द या अव्यय शब्द** – वे शब्द जिनका लिंग, वचन, काल, पुरूष, कारक के अनुसार रूप परिवर्तित नही होता है, अवकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों का रूप सदैव वही बना रहता है इसलिए उन्हें अव्यय शब्द कहा जाता है। अविकारी शब्दों में क्रिया, विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक आदि अव्यय शब्द आते हैं।

(4) अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नांकित भाग किए गए हैं।

(i) एकार्थी शब्द – जिन शब्दों का अर्थ एक ही अर्थ में होता है उन्हे एकार्थी शब्द कहते हैं।
जैसे – लड़का, पहाड़, नदी, धूप, दिन

(ii) अनेकार्थी शब्द – जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं। उन्हें अनेकार्थ शब्द कहते हैं। इनका प्रयोग अलग–अलग अर्थ में प्रसंगानुसार किया जाता है।
जैसे – कर, सारंग हरि, अज, अमृत आदि।

(iii) पर्यायवाची शब्द – वे शब्द जिनका अर्थ समान होता है, अर्थात् किसी शब्द के समान अर्थ की प्रतीति करने वाले अथवा अर्थ की दृष्टि से लगभग समानता रखने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। जैसे – अमृत, पीयूष, सुधा, अमिय, सोम आदि शब्द 'अमृत' के समानार्थी हैं अतः ये शब्द अमृत के पर्यायवाची शब्द हैं।

(iv) विलोम शब्द – एक–दूसरे का विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं, जैसे – दिन–रात, माता–पिता आदि।

(v) सम उच्चरित शब्द या युग्म शब्द – ऐसे शब्द जिनका उच्चारण समान–सा प्रतीत होता है किन्तु अर्थ पूर्णतया भिन्न होता है उन्हें समानार्थी प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द अथवा 'युग्म–शब्द' कहते हैं।

जैसे – आदि–आदी।

'आदि' का अर्थ प्रारंभ है किंतु 'आदी' का अर्थ है आदत होना अथवा लत होना। इस प्रकार उच्चारण समान–सा प्रतीत होते हुए भी अर्थ भिन्न होता हैं।

(vi) शब्द समूह के लिए एक शब्द – जब किसी वाक्य, वाक्यांश या समूह का तात्पर्य एक शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है अथवा 'एक शब्द' मे उस वाक्यांश का अर्थ निहित हो, उसे 'शब्द समूह' के लिए 'एक शब्द' कहते हैं, जैसे – जहाँ जाना संभव न हो – अगम्य। जो अपनी बात से टले नहीं = अटल।

(vii) समानार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द – ऐसे शब्द जो प्रथम दृष्टया रचना की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं एवं अर्थ की दृष्टि से भी बहुत समीप होते हैं। किंतु उनके अर्थ में बहुत सूक्ष्म अंतर होता है तथा अलग संदर्भ में ही जिनका प्रयोग सम्भव है जैसे –

अस्त्र – फेंक कर वार किए जाने वाले हथियार, जैसे–तीर, भाला आदि।

शस्त्र – जिन हथियारों का प्रयोग हाथ में रखकर किया जाता है, जैसे – तलवार, लाठी, चाकू आदि।

(viii) समूहवाची शब्द – ऐसे शब्द जो एक समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं अथवा सामूहिक वस्तुओं का अर्थ प्रकट करते हैं उन्हें समूहवाची शब्द कहते हैं, जैसे –

गट्ठर – लकड़ी या पुस्तकों का समूह।
गुच्छा – चाबियों या अंगूर का समूह।
गिरोह – माफिया या चोर, डाकुओं का समूह।
रेवड़ – भेड़, बकरी या पशुओं का समूह।
इसी प्रकार झुंड, टुकड़ी, पंक्ति, माला आदि शब्द हैं।

(ix) ध्वन्यार्थक शब्द – ऐसे शब्द जिनका अर्थ ध्वनि पर आधारित हो, उन्हें ध्वन्यार्थक शब्द कहते हैं।

इनको निम्नांकित उपभेदों में बाँट सकते हैं –

पशुओ की बोलियाँ	पक्षियों की बोलियाँ	जड़ पदार्थो की ध्वनियाँ
दहाड़ना – शेर	पीऊ–पीऊ – मोर	कड़कना – बिजली
भौंकना – कुत्ता	काँव–काँव – कौआ	खटखटाना – दरवाजा
हिनहिनाना – घोड़ा	गुटर–गूँ – कबूतर	छुक–छुक – रेलगाड़ी
चिंघाड़ना – हाथी	कुकडू–कूँ – मुर्गा	खन–खनाना – सिक्के
मिमियाना – भेड़, बकरी	कुहुकना – कोयल	गरजना – बादल
रंभाना – गाय	चहचहाना – चिड़िया	
फुंफकारना – साँप		
टर्राना – मेढ़क		
गुर्राना – चीता		
म्याऊँ – बिल्ली		

4 CHAPTER उपसर्ग

उपसर्ग – उप + सर्ग से बना है । उप का अर्थ समीप व सर्ग का अर्थ रचना होता है।

परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व जुडकर अर्थ में परिवर्तन कर देते है और नये सार्थक शब्द की रचना कर देते है, उन्हे उपसर्ग कहते है।

- उपसर्ग किसी शब्द के पूर्व ही जुडते है। उपसर्ग शब्द नही होते बल्कि शब्दांश होते है – शब्द का टुकडा।
- उपसर्गो का स्वतंत्र अर्थ नही होता और जो उनका अर्थ होता है वह प्रभावित नही करता है।
- उपसर्गो का अर्थ किसी शब्द के पूर्व लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है।
- **उपसर्ग तीन तरह से अर्थ को प्रभावित करते है–**
  1. सकारात्मक अर्थ
  2. नकारात्मक अर्थ
  3. विलोमार्थ / विलोम जैसा

1. सकारात्मक

आचार्य – प्राचार्य
सिद्धि – प्रसिद्धि

2. नकारात्मक

हार – प्रहार
हार – संहार
मान – अपमान

उदाहरण –

आ + हार – आहार = भोजन
प्र + हार – प्रहार = आक्रमण
सम् + हार – संहार = मारना
उप + हार – उपहार = भेंट
वि + हार – विहार = घूमना
नि + हार – निहार = देखना
परि + धान – परिधान = वस्त्र
प्र + धान – प्रधान = मुख्य
उप + धान – उपधान = तकिया
अपि + धान – अपिधान = ढक्कन
अभि + धान – अभिधान = नाम
वि + धान – विधान = कानून

- उपसर्ग का स्वतंत्र रूप में प्रयोग नही होता है। इनका प्रयोग शब्दों के साथ ही होता है और शब्दो के साथ लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है जो निम्नानुसार है –

(उपसर्ग के भेद)

हिंदी भाषा में तीन प्रकार के उपसर्ग होते हैं –

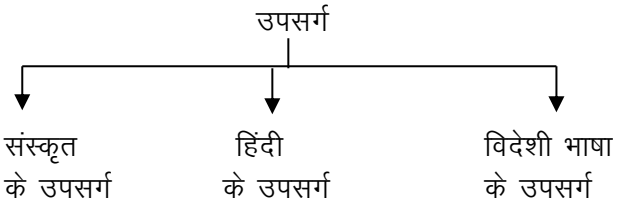

उपसर्गों की संख्या (22)

प्र	→	प्रयोग	(प्र + योग)
परा	→	पराक्रम	(परा + क्रम)
अप	→	अपशब्द	(अप + शब्द)
सम्	→	संसार	(सम् + सार)
अनु	→	अनुशासन	(अनु + शासन)
अव	→	अवधारणा	(अव + धारणा)
निस्	→	निस्तेज	(निस् + तेज)
निर्	→	निराहार	(निर् + आहार)
दुस	→	दुस्साहस	(दुस् + साहस)
दुर्	→	दुरवस्था	(दुर् + अवस्था)
वि	→	विजय	(वि + जय)
आ	→	आजीवन	(आ + जीवन)
नि	→	निबन्ध	(नि + बन्ध)
प्रति	→	प्रत्याशा	(प्रति + आशा)
परि	→	पर्यावरण	(परि + आवरण)
उप	→	उपवन	(उप + वन)
अपि	→	अपिधान	(अपि + धान)
अति	→	अत्यधिक	(अति + अधिक)
सु	→	सुपुत्र	(सु + पुत्र)
उद् (उत्)	→	उद्भव	(उद् + भव)
अभि	→	अभिभाषण	(अभि + भाषण)
अधि	→	अधिकार	(अधि + कार)

1. प्र उपसर्ग – आगे / अधिक

प्रगति – प्र + गति
प्राचार्य – प्र + आचार्य (दीर्घ संधि)
प्रख्यात – प्र + ख्यात (संयोग)
प्रतीत – प्र + अतीत
प्रोन्नति – प्र + उन्नति (गुण संधि)
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रकार – प्र + कार
प्रचुर – प्र + चुर
प्रकृति – प्र + कृति
प्राकृतिक – प्र + कृति + इक
प्राध्यापक – प्र + अध्यापक

प्र उपसर्ग

प्रबल, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रमाण (प्र + मान), प्रणाम (प्र + नाम), प्रकोप, प्रार्थना (प्र + अर्थना), प्रकीर्ण, प्रबुद्ध, प्रयास, प्रादुर्भाव, प्रस्तावना, प्रहसन, प्रस्तुत, प्रमोद इत्यादि।

2. परा उपसर्ग – अधिक/पीछे

पराजय	– परा	+ जय
पराभव	– परा	+ भव
पराविधा	– परा	+ विधा
पराक्रम	– परा	+ क्रम
पराकाष्ठा	– परा	+ काष्ठा
पराभव	– परा	+ भव
परामर्श	– परा	+ मर्श
परास्त	– (परा	+ अस्त)
परावर्तन	– (परा	+ वर्तन)
पराशर	– (परा	+ शर)

3. अप उपसर्ग – बुरा/हीन

अपमान	– अप	+ मान (संयोग)
अपराध	– अप	+ राध
अब्ज	– अप्	+ ज
अब्द	– अप्	+ द
अपेक्षा	– अप	+ ईक्षा (गुण सन्धि)
अपहरण	– अप	+ हरण
अपभरण	– अप	+ भरण
अपव्यय	– अप	+ व्यय
अपकार	– अप	+ कार
अपंग	– अप	+ अंग
अपांग	– अप	+ अंग

अपहरण, अपभ्रंश, अपकीर्ति, अपवर्तन, अपयश, अपदान

4. सम् उपसर्ग – समान–विशुद्ध

संस्कार	– सम्	+ कार
संस्कृति	– सम्	+ कृति
संविधान	– सम्	+ वि + धान
सम्मान	– सम्	+ मान
समाचार	– सम्	+ आचार
संशय	– सम्	+ शय

संस्कृत, संवाद, संहार, संज्ञा (सम् + ज्ञा), समग्र (सम + अग्र), समागम, समायोजन, समारोह, समाविष्ट (सम् + आ + विष्ट), समूह (सम् + ऊह), समृद्ध (सम् + ऋद्ध), समुच्चय (सम् + उद् + चय), संदिग्ध, संदेहास्पद, संपर्क, संस्तुति, सन्नयास (सम् + नि् + आस), सन्निवेश (सम् + नि + वेश), सामूहिक (सम् + ऊह + इक), संयुक्त, संलग्न, संतोष।

5. अनु उपसर्ग – पीछे / विपरीत

अन्वय	– अनु	+ अय
आनुवंशिक	– अनु	+ वंश + इक
अनुदार	– अनु	+ दार
अनूत्तर	– अनु	+ उत्तर
अनुदान	– अनु	+ दान
आनुपातिक	– अनु	+ पात + इक
अनुसार	– अनु	+ सार
अनूदित	– अनु	+ उदित
आनुशंगिक	– अनु	+ शंग + इक

अन्वेषण, अन्विति (अनु + इति), अनुच्छेद, अनुज, अनुशासन, अनुकरण, अनुजा, अनुयायी, अनुसंधान, अनुग्रह, अनुशीलन, अनुभव

6. अव उपसर्ग – बुरा / हीन

अवतार	– अव	+ तार
अवधान	– अव	+ धान
अवध	– अव	+ ध
अवज्ञा	– अव	+ ज्ञा
अवमानना	– अव	+ मानना
अवहेलना	– अव	+ हेलना
अवसर	– अव	+ सर

अवधारणा, अवनति, अवशेष, अवगुण, अवस्था, अवलेह, अवतीर्ण, अवांतर (अव + अन्तर), अविच्छन (अव + छिन्न), आवयविक (अव + यव + इक), अवसाद, अवगाहन, अवधि

7. निस् उपसर्ग – निषेध, बाहर

निश्चय	– निस्	+ चय
निष्फल	– निस्	+ फल
निश्छल	– निस्	+ छल
निष्पाप	– निस्	+ पाप
निष्चिन्तता	– निस्	+ चिन्तता
निस्संकोच	– निस्	+ संकोच

निश्शुल्क/निःशुल्क – निस् + शुल्क

निस्तेज, निष्श्वास (निस् + श्वास), निष्पक्ष, निष्काम, निष्कर्ष, निष्कर्म

8. निर् उपसर्ग – निषेध, बाहर

निर्जन	– निर्	+ जन (संयोग)
निर्धन	– निर्	+ धन
नीरस	– निर्	+ रस
नीरोग	– निर्	+ रोग
निरन्तर	– निर्	+ अन्तर
निरंजन	– निर्	+ अंजन
निरादर	– निर्	+ आदर
निराषा	– निर्	+ आषा
नीरव	– निः	+ रव
नीरन्ध्र	– निः	+ रन्ध्र
निर्भय	– निर्	+ भय

नोट – नीरज (नीर+ज) में निर् उपसर्ग नहीं होता है।
निराहार, निरपराध, निरर्थक, निर्मल, निर्बल, निर्भीक, निर्वाचन, निर्विरोध, निरंकुश, निरन्तर, निरनुनासिक, निरवलंब, निराकार, निरीक्षक (निर् + ईक्षक), निरूत्साह (निर् + उत्साह), निर्मम, निर्यात, निर्देश

9. दुस् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत

दुष्चिन्ता – दुस् + चिन्ता
दुष्चरित्र – दुस् + चरित्र
दुष्पाप – दुस् + पाप
दुष्फल – दुस् + फल
दुश्मन – दुस् + मन
दुष्परिणाम – दुस् + परिणाम
दुश्शासन – दुस् + शासन
दुष्प्रभाव – दुस् + प्रभाव
दुस्साहस, दुष्कर्म, दुष्प्रयोग, दुष्चरित्र, दुष्कर

10. दुर् उपसर्ग– बुरा, हीन, विपरीत

दुर्गम – दुर् + गम
दुर्ग – दुर् + ग
दुर्जन – दुर् + जन
दुर्दशा – दुर् + दशा
दुर् + अव + स्थ + आ, दुरावस्था नहीं होती है। (दुरवस्था)
दुराशा – दुर् + आशा
दूरम्य – दुर् + रम्य
दौर्बल्य (दुर् + बल + य)
दुरूप्रयोग, दुराशा, दुर्धटना, दुर्गति, दुर्बल, दुर्गंध, दुर्बुद्धि, दुर्व्यवहार (दुर् + वि + अव + हार), दूरम्य (दुर् + रम्य), दौर्जन्य (दुर् + जन + य), दुर्गुण, दुर्जन, दुराचार, दुर्लभ

11. वि उपसर्ग – विशेष या भिन्न

व्यास – वि + आस
व्याकरण – वि + आ + करण
व्याकुल – वि + आकुल
व्यावहारिक – वि + अव + हार + इक
वैधव्य – वि + धवा + य
विवाह – वि + वाह
वैवाहिक – वि + वाह + इक
विजय – वि + जय
व्यूह – वि + ऊह
व्यायाम – वि + आयाम
वीक्षक – वि + ईक्षक
वीप्सा – वि + ईप्सा
व्यय (वि + अय), व्याधि, व्यायाम, व्याख्या, विशेष, विकास, विघटन, वितृष्णा, विन्यास, विपर्यय (वि + परि + अय) विप्रलंभ, विवेक, व्यंजन (वि + अंजन), व्यतिरेक, व्यवसाय (वि + अव + साय), व्यस्त, विच्छेद वैशेषिक, वैकल्पिक, विज्ञान, विहार, विमान, विवरण।

12. आ उपसर्ग – तक/से

आजन्म – आ + जन्म
आमरण – आ + मरण
आम – आ + म
आजानुबाहु – आ + जानुबाहु
आकाश – आ + काश
आकण्ठ – आ + कण्ठ
आजीवन, आरक्षण, आहार, आकर्षण, आकांक्षा, आक्रमण, आग्रह, आदान, आनंद, आभूषण, आयात, आराधना, आशंका, आश्रय, आसन्न, आदेश, आजना, आभार, आगमन, आरोहण, आदेश

13. नि उपसर्ग – नीचे, कमी

निषंग – नि + संग
न्यास – नि + आस
न्याय – नि + आय
न्यस्त – नि + अस्त
निवास – नि + वास
निषेध – नि + सेध
निष्ठा – नि + ष्ठा
न्यून, – नि + ऊन
नैदानिक – नि + दान + इक
निडर, निबंध, निदाघ, निदेशक, नियंत्रण, नियुक्ति, निरत, निलंबन, निहित, न्यसत, निवारण, निषेध

14. अधि उपसर्ग – श्रेष्ठ/ऊपर

अधित्यका – अधि + त्यका
अध्यक्ष – अधि + अक्ष
अध्याय – अधि + आय
अधीन – अधि + इन
अधीत – अधि + इत
अधिकार – अधि + कार
अध्यादेश – अधि + आदेश
अधीक्षक – अधि + ईक्षक
आध्यात्मिक – अधि + आत्मिक
अध्यात्म, अधिकरण, अधिनियम, अधिशासी, अधिसूचना, अधीक्षण, अध्ययन, अधिष्ठाता, अधिशेष

15. अपि उपसर्ग – भी, परे

अपितु – अपि + तु
अप्यलम – अपि + अलम (थोडा)
अपिहित – अपि + हित
अपिधान – अपि + धान

16. अति उपसर्ग – अधिक

अत्यन्त – अति + अन्त
अत्याचार – अति + आचार
अतीत – अति + इत
अत्यधिक – अति + अधिक
अत्यल्प – अति + अल्प
अत्युक्ति, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अतिव्याप्त, अतिशय, अतींद्रिय, अतीव, अत्याधुनिक, आत्यंतिक (अति + अन्त + इक), अतिप्रिय, अतिसार।

17. सु उपसर्ग – सरल/सुन्दर

स्वच्छ – सु + अच्छ
स्वल्प – सु + अल्प
स्वागत – सु + आगत
सूक्ति – सु + उक्ति
सौजन्य – सुजन + य

सुपुत्र, सुगंध, सुशील, सुचरित्र, सुदूर, सुपाच्य, सुरति, सुलभ, सुविधा, सुव्यवस्थित, सुह्रद, स्वयं (सु + अयं) सुषमा, सुषुप्त, सौभाग्य (सु + भाग + य) सौमित्र (सु + मित्र + अ), सुयोग, सुलथ, सुगम

18. उद्, उत् उपसर्ग – श्रेष्ठ / ऊपर

उच्चारण – उत् + चारण
उच्छवास – उत् + श्वास
उच्छृंखला – (उत् + श्रृंखला)
उन्नति – उद् + नति
उत्तीर्ण – उद् + तीर्ण

उल्लेख, उद्धार, उच्छासन, उज्ज्वल, उद्घाटन, उद्देश्य (उद् + देश्य), उद्धत (उद् + हत), उद्भव, उदार, उत्सर्ग, उत्साह, उत्तम।

नोट– संस्कृत व्याकरण ग्रंथो मे उद् उपसर्ग ही है जबकि हिन्दी में उत् उपसर्ग का भी प्रयोग होता है।

19. अभि उपसर्ग – सामने / पास

अभ्यास – अभि + आस
अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
अभ्यागत – अभि + आगत
अभीष्ट – अभि + इष्ट
अभीप्सा – अभि + ईप्सा
अभ्यागत – अभि + आगत

अभ्युदय (अभि + उदय), अभिमान, अभिज्ञान, अभिभाषण, अभिथा, अभिन्यास, अभियंता, अभिराम, अभिलाषा, अभिशंसा, अभिशाप, अभिवादन, अभियान, अभिषेक (अभि + सेक)

20. प्रति उपसर्ग – प्रत्येक/सामने

प्रत्युशा – प्रति + उशा
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रतिदिन – प्रति + दिन
प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण
प्रतिज्ञा – प्रति + ज्ञा
प्रतिष्ठा – प्रति + स्था
प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा

प्रत्याशा (प्रति + आशा), प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिक्रिया, प्रतिक्षण, प्रतिनियुक्ति, प्रतिनिधि, प्रतिस्पर्धा, प्रतिहिंसा, प्रतिवर्ष

21. परि उपसर्ग – चारो ओर/पास

पर्यावरण – परि + आवरण
परीक्षा – परि + ईक्षा
पर्याप्त – परि + आप्त
पर्यंक – परि + अंक
पारिवारिक – परिवार + इक

पर्यटन (परि + अटन), परिक्रमा, परिपूर्ण, परिमाण (परि + मान), परिणाम (परि + नाम) परिधान, परिधि, परिमार्जन, परिवार, परिवेश, परिश्रम, पारिभाषिक (परि + भाष + इक), पारिवारिक, परिष्कार (परि + कार) पर्यूषण (परि + उषण), पर्यवेक्षण, पर्याप्त (परि + आप्त), परीक्षा (परि + ईक्षा), परिवर्तन

22. उप उपसर्ग – समीप/नीचे

उपत्यका – उप + अति + अका
उपकार – उप + कार
उपदेश – उप + देश
उपेक्षा – उप + ईक्षा
उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष (अध्यक्ष)
उपमंत्री – उप + मंत्री
उपाचार्य – उप + आचार्य
औपनिवेशक– उप + निवेश + इक

उपसर्ग, उपवन, उपहार, उपनिवेश, उपन्यास, उपमा (उप + मा), उपमान, उपलब्धि, उपस्थिति, उपांग (उप + अंग), उपाधि, उपाध्याय, उपार्जन, उपालंभ (उप + आ + लंभ), उपवास।

संस्कृत के अन्य उपसर्गों का विवरण

1. तद् (तत्) – तद्भव, तत्सम, तल्लीन, तन्मय, तन्मात्रा, तत्पर, तदुपरान्त।
2. सम् – सत्कार, सत्संग, सद्भावना, सदाचार, सच्चरित्र, सच्चिदानंद, सन्मार्ग, सज्जन, सन्मति
3. स्व –स्वदेा, स्वजन, स्वतंत्र, स्वार्थ, स्वायी, स्वाधीन, स्वाध्याय, स्वावलम्बन, स्वाभिमान, स्वभाव।
4. प्र – परदेा, परतंत्र, परहित, परोपकार, पराधीन, पराश्रित
5. अ – अशुभ, अहित, अन्याय, अनाथ, अविवेक, अनश्वर
6. अन् –अनुपयोगी, अनुपजाऊ, अनुर्वर (अन् + उर्वर), अनीश्वर, अनृम, अनान, अनंग, अनादि।
7. इति –इतिहास, इजिश्री, इत्यादि
8. स –सपरिवार, सशर्त, ससम्मान, समान, सहित
9. न – नास्तिक, नगण्य, नग, नहंसक
10. सह – सहचर, सहकर्मी, सहपाठी, सहयात्री, सहयोग, सहोदर
11. आत्म –आत्मज्ञान, आत्मरक्षा, आत्मबलिदान, आत्महत्या, आत्मावलोकन

12. अधस् – अधोमति, अधोगामी,

(अधः) अधोलिखित, अधोवस्त्र, अधो हस्ताक्षर, अधःपतन

13. अन्तर – अन्तर्गत, अन्तर्देशीय,

(अन्तः)अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तरात्मा, अन्तः साक्ष्य, अन्तश्चेतना, अन्तर्हित

14. अन्तर – अन्तरराष्ट्रीय

15. प्रातर – प्रातःकाल, स्मरणीय, (प्रातः) प्रातः प्रातः वन्दवनीय

16. पुरस् – पुरस्कार, पुरस्कृत, (पुरः) पुरस्कर्ता, पुरोहित, पुरोगामी

17. पुनर – पुनर्जन्म, पुनर्गणना, (पुनः) पुनरावृत्ति, पुनरवलोकन

18. तिरस् – तिरस्कार, तिरोभाव, (तिरः) तिरोहित, तिरस्कृत तिरस्कर्ता

19. आविस् – आविष्कार, आविष्कृत, (आविः) आविष्कर्ता

20. आविर् –आविर्भाव, आविर्भूत (आविः)

21. प्रादुर – प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत (प्रादूः)

22. प्राक् – प्राक्कलन, प्राक्कथन, प्राङ्. मुख, प्रागैतिहासिक (प्राक् + इतिहास + इक)

(2) हिन्दी के उपसर्ग

हिन्दी भाषा में संस्कृत के उपसर्गो में परिवर्तन करके (तद्भव) उपसर्गो का निर्माण किया गया है।

क्र. स.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अ	अभाव / नही	अभाव, अखण्ड, अज्ञान, अजर, अमर, अकाज, अचेत, अटल, अछूता, अटल, अथाह, अपच, अलग।
2.	उ	ऊँचा	उतारना, उछालना, उखाड़ना, उजड़ना, उतावला, उचक्का, उतारना।
3.	औ	बुरा / नीचे	औघट, औगुण, औसर, औतार, औघड़
4.	अन	बिना	अनदेखा, अनमोल, अनपढ़, अनमेल, अनहोनी
5	अध	आधा	अधखिला, अधपका, अधमरा, अधजला
6.	अधः	नीचे	अधोमुख, अधोगति, अधोगत
7.	उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उन्नासी, अनतालिस, उनहतर, उन्नीस।
8.	क / कु	बुरा / कठिन	कपूत, कुढंग, कुचाल, कुपुत्र, कुठौर, कुटेव, कुख्यात, कुरीति, कुकर्म, कुमार्ग
9.	नि	विपरीत	निडर, निशान, निपट, निठल्ला, निधड़क, निपट, निहत्था, निपूता, निकम्मा।
10.	स / सु	अच्छा	सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त, सवेरा, सहेली, सुजान, सुडौल, सुघड़, सचेत, सजग।
11.	भर	पुरा / भरा हुआ	भरपूर, भरमार, भरसक, भरपाई, भरपेट, भरकम।
12.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौखट, चौरंगी, चौपहिया, चौपाया, चौपाल, चौपाई, चौबारा, चौपड़, चौमुखा।
13.	दु	दो	दुनाली, दुरंगा, दुमुँह, दुगुना, दुपट्टा, दुपहिया, दुबारा, दुपहर, दुधारी, दुभाँत, दुभाषिया, दुमट, दुलत्ती।
14.	ति	तीन	तिरंगा, तिपाही, तिमाही, तिराहा, तिकोना, तिबारा
15.	पर	दूसरा	परहित, परसुख, परकाज, परदादा, परपोता।
16.	चिर्	देर तक	चिरकाल, चिरायु, चिरस्थायी, चिरपरिचित, चिराग, चिरंजीवी।
17.	बिन	अभाव / निषेध	बिनदेखा, बिनखाया, बिनब्याहा, बिन जाने, बिनबोया, बिनसोचा, बिनमाने, बिनबुलाया, बिनजाया।
18.	बहु	ज्यादा / अधिक	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन
19.	स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव
20.	सह	साथ	सहचर, सहपाठी, सहयोग
21.	सम	समान	समतल, समकक्ष, समकालीन, समकोण

(3) विदेशी भाषा के उपसर्ग

भारत में बहुत समय तक उर्दू व अन्य विदेशी भाषाएँ प्रचलित रही हैं। अतः हिन्दी भाषा में उर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के उपसर्ग भी प्रयुक्त होने लगे हैं।

क्र. सं.	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अल	निश्चित	अलविदा, अलबेला, अलमस्त, अलहदा, अलबत्ता, अलकायदा।
2.	ना	रहित	नालायक, नापसंद, नापाक, नाइंसाफी, नाखुश, नाकाम, नामुमकिन, नादान, नाबालिग, नामुराद, नाराज, नाउम्मीद, नाजायज।
3.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका, ऐनआदमी, ऐनइनायत।
4.	ला	बिना	लाचार, लाजबाव, लापता, लाइलाज, लाजिम, लापरवाह, लावारिस।
5.	बद	बुरा/रहित	बदनाम, बदजात, बदतमीज, बदकिस्मत, बदनसीब, बदचलन, बदमिजाज, बदसूरत, बदहवास, बदहजमी, बदहाल।
6.	बा	अनुसार/साथ	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत, बामुलाहजा।
7.	गैर	रहित/भिन्न	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क, गैर, कौम, गैरजिम्मेदार, गैर–मुमकिन, गैर–सरकारी।
8.	खुश	अच्छा	खुशमिजाज, खुश–किस्मत, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू, खुशदिल, खुशनुमा, खुशनसीब।
9.	कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल, कमउम्र, कमबख्त,
10.	हम	साथ	हमदम, हमसफर, हमराह, हमजोली, हमवतन, हमउम्र, हमराज, हमदर्द।
11.	बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर, बिलाकानून, बिलाशर्त ।
12.	बे	अथवा	बेचारा, बेहद, बेचैन, बेअक्ल, बेईमान, बेइज्जत, बेखौफ, बेजान, बेदर्द, बेधड़क, बेनजरी, बेरहम, बेबुनियाद, बेवकूफ, बेवफा, बेवक्त, बेशक, बेसमझ, बेहद, बेहिसाब, बेकार, बेगम, बेघर, बेसहारा, बेदखल।
13.	दर	में	दरअसल, दरकार, दरवेश।
14.	हर	प्रत्येक	हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज, हरएक, हरजाई, हरकोई, हरतरफ, हरदम, हरबार, हरवक्त, हररोज, हरपल, हरसाल।
15.	ब	साथ/पर	बदस्तुर, बतौर, बशर्त, बजाय, बखूबी, बदौलत, बशर्ते।
16.	सर	मुख्य/प्रधान	सरकार, सरताज, सरदार, सरनाम, सरपंच।
17.	नेक	भला	नेकदिल, नेकनियत, नेकनाम।
18.	हैड	प्रमुख	हैडमास्टर, हैडबॉय, हैडगर्ल।
19.	सब	उप	सब इंस्पेक्टर, सबडिवीजन, सबकमेटी।
20.	बर	उपर/बाहर	बरकरार, बरबाद, बरदाश्त, बरखास्त।
21.	टेली	(दूर)	टेलीविजन, टेलीफोन।
22.	हाफ	आधा	हाफपेंट, हाफ टिकिट, हाफशर्ट।
23.	जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सैक्रेटरी।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण शब्द (हर टॉपर चयनित की पसंद)

	शब्द	उपसर्ग	कुल उपसर्ग
1.	दुर्व्यवहार	दुर् + वि + अव + हार → 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
2.	अस्वभाविक	अ + स्व + भाव + इक → 1 सु + अ 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
3.	पर्यावरण	परि + आवरण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
4.	अव्यवस्था	अ + वि + अव + स्था → 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
5.	अप्रत्याशित	अ + प्रति + आशा + इत → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
6.	अतिव्याप्ति	अति + वि + आप्ति → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग

7.	अत्यावश्यक	अति + आ + वश्यक → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
8.	अधिनियम	अधि + नि + यम → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
9.	अभिन्यास	अभि + नि + आस → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
10.	अभ्यागत	अभि + आ + गत → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
11.	प्रत्यपकार	प्रति + अप + कार → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
12.	प्रति नियुक्ति	प्रति + नि + उक्ति → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
13.	प्रत्यावर्तन	प्रति + आ + वर्तन → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
14.	प्रत्युत्तर	प्रति + उद् + तर → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
15.	पर्यवेक्षण	परि + अव + ईक्षण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
16.	व्यतिरेक	वि + अति + रेक → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
17.	व्यवसाय	वि + अव + साय → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
18.	व्याकरण	वि + आ + करण → 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
19.	व्याकुल	वि + आ + कुल 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
20.	वैयाकरण	वि + आ + करण + अ	दो उपसर्गो का प्रयोग
21.	आन्वीक्षिकी	अनु + ईक्षा + इक + ई 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
22.	सुव्यवस्थित	सु + वि + अव + स्थित 1 2 3	तीन उपसर्गो का प्रयोग
23.	सुविख्यात	सु + वि + ख्यात 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
24.	स्वागत	सु + आ + गत 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
25.	अपव्यय	अप + वि + अय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
26.	अपराधिक	अप + राध + इक 1	एक उपसर्ग का प्रयोग
27.	उपन्यास	उप + नि + आस 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
28.	उपाध्यक्ष	उप + अधि + अक्ष 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
29.	उपाध्याय	उप + अधि + आय 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग
30.	औपनिवेशक	उप + नि + वेश + इक 1 2	दो उपसर्गो का प्रयोग